(२३२)

रात-दिन नित्य इस सत्य का चिन्तन करो कि संसार के मत-पथ और समाज केवल आपके अपने ही संकल्प हैं। आप ही वह असली शक्ति हैं, सम्पूर्ण संसार जिसका श्वाँस अथवा छायामात्र है।

(२३३)

भोजन का जो कौर आपके मुँह में जाये, उसके साथ आपको यह चिन्तन करना चाहिये कि यह कौर समस्त भूमण्डल का प्रतिनिधि-रूप है। मैं यहाँ इसके द्वारा सारे ब्रह्माण्ड को अपने भीतर लीन कर रहा हूँ।

(२३४)

प्रत्येक रात्रि को या मध्याह्न के समय सोने से पहले जब आँख बन्द होने लगे तब अपने मन में ऐसा दृढ़ निश्चय कीजिये कि जागने पर आप अपने को वेदान्तिक सत्य की साक्षात् मूर्ति पायेंगे।

श्रीकृष्णार्पणमस्तु